KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 3

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग
आरंभिक समाज (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 5

आरम्भिक समाज की स्थिति

Pritesh Joshi

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



जन्म के परे

संसाधन और प्रतिष्ठा :-

- यदि हम आर्थिक संबंधों पर विचार करें तो देखेंगे कि दास, भूमिहीन खेतीहर मजदूर, शिकारी, मछुआरे, पशुपालक, किसान, ग्राम मुखिया, शिल्पकार, वणिक और राजा सभी का उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में सामाजिक-अभिनायक के रूप में उद्भव हुआ।
- उनके सामाजिक स्थान इस बात पर निर्भर करते थे कि आर्थिक संसाधनों पर उनका कितना नियंत्रण हैं।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



पासे

संपत्ति पर स्त्री और पुरूष के भिन्न अधिकार :-

- महाभारत के एक महत्वपूर्ण प्रकरण पर विचार करते हैं ....
- कौरव और पांडव के बीच लंबे समय से चली आ रही प्रतिस्पर्धा के फलस्वरूप दुर्योधन ने युधिष्ठिर को द्यूत क्रीडा के लिए आमंत्रित किया।
- युधिष्ठिर अपने प्रतिद्वन्द्वी द्वारा धोखा दिये जाने के कारण इस द्यूत में स्वर्ण, हस्ति, रथ, दास, सेना, कोष, राज्य तथा अपनी प्रजा की संपत्ति, अनुजों और फिर स्वयं को भी दाँव पर लगा कर गँवा बैठे।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इसके उपरांत उन्होंने पांडवों की सहपत्नी द्रोपदी को भी दाँव पर लगाया और उसे भी हार बैठे।

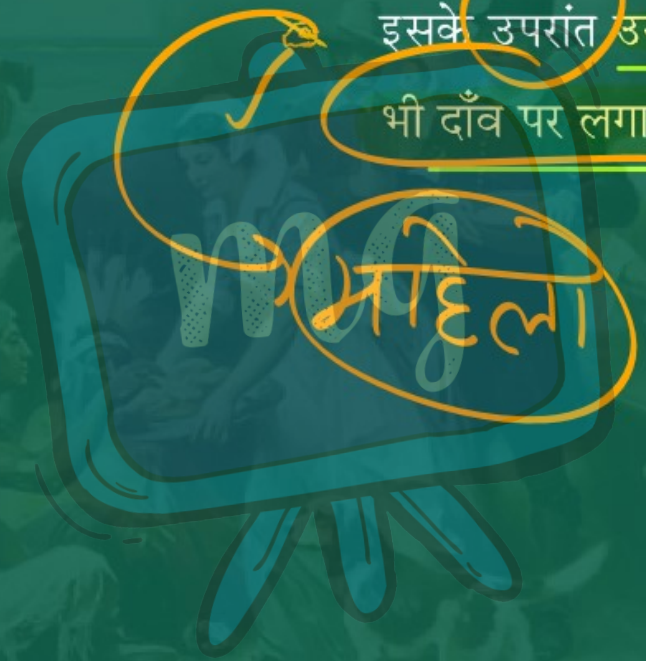

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

महाभारत

पैतृक जायदाद

पुत्रों के बीच समान वितरण

ज्येष्ठ पुत्र ↑

- संपत्ति के स्वामित्व के मुद्दे जो इन कहानियों में वर्णित है, धर्मसूत्र एवं धर्मशास्त्रों में भी उठाये गये हैं।
- मनुस्मृति के अनुसार पैतृक जायजाद का माता-पिता की मृत्यु के बाद सभी पुत्रों में समान रूप से बँटवारा किया जाना चाहिए किंतु ज्येष्ठ पुत्र विशेष भाग का अधिकारी था। स्त्रियां इस पैतृक संसाधन में हिस्सेदारी की मांग नहीं कर सकती थीं।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- किंतु विवाह के समय मिले उपहारों पर स्त्रियों का स्वामित्व माना जाता था और इसे स्त्रीधन (स्त्री का धन) की संज्ञा दी जाती थी। इस संपत्ति को उसकी संतान विरासत के रूप में प्राप्त कर सकती थी और इस पर उसके पति का कोई अधिकार नहीं होता था।
- किंतु मनुस्मृति स्त्रियों को पति की आज्ञा के विरूद्ध पारिवारिक संपत्ति या स्वयं अपने बहुमूल्य धन के गुप्त संचय के विरूद्ध भी चेतावनी देती है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- एक धनाढ्य वाकाटक-महिषी प्रभावती गुप्त के साथ-साथ अनेक अभिलेखीय व साहित्यिक-साक्ष्य इशारा करते हैं कि उच्च वर्ग की महिलाऐं तो संसाधनों पर अपनी पैंठ रखती थी जबकि सामान्यतः भूमि, पशु व धन पर पुरूषों का ही नियंत्रण था।
- इसलिए स्त्री और पुरूष के बीच सामाजिक हैसियत की भिन्नता संसाधनों पर उनके नियंत्रण की भिन्नता की वजह से ही ज्यादा प्रखर हुई।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

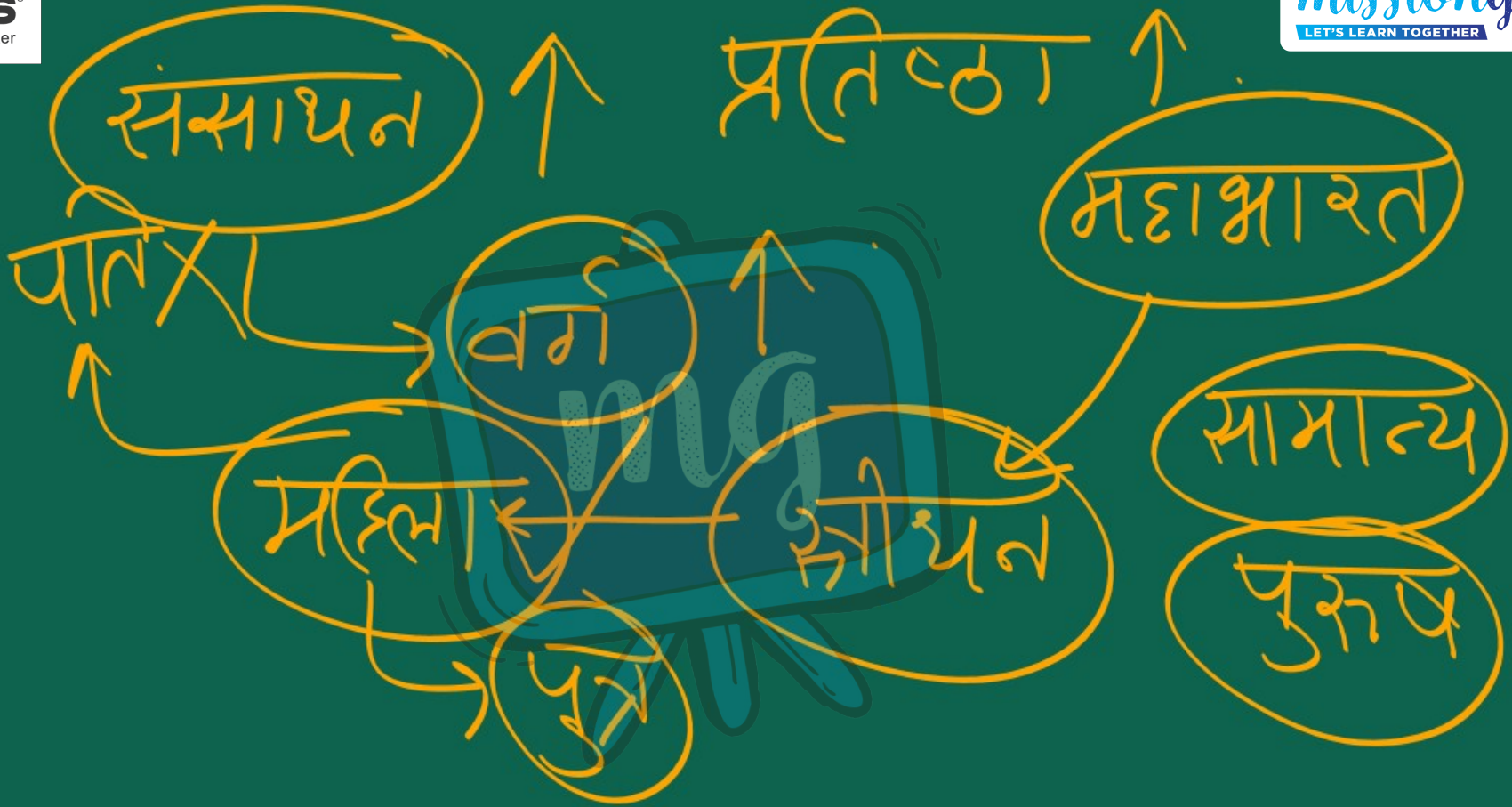

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मनुस्मृति



- विरासत
- खोज
- खरीद
- विजित
- निवेश
- कार्य
- सज्जनों

उपहार



- वैवाहिक अग्नि
- वधूगमन
- पिता
- माता
- भ्राता
- पति

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



वर्ण और संपत्ति के अधिकार :-

- ब्राह्मणीय ग्रंथों के अनुसार संपत्ति पर अधिकार का एक और आधार वर्ण था। (लैंगिक आधार के अतिरिक्त)
- शूद्रों के लिए एकमात्र 'जीविका' ऐसी सेवा थी जिसमें हमेशा उनकी इच्छा शामिल नहीं होती थी।
- हालांकि तीनों उच्च वर्णों के पुरूषों के लिए विभिन्न जीविकाओं की संभावना रहती थी।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. प्राचीन काल में वर्ण और संपत्ति के रिश्ते को आप कैसे परखते हैं?

यदि इन सब विधानों को वास्तव में कार्यान्वित किया जाता है तो ब्राह्मण और क्षत्रिय सबसे धनी व्यक्ति होते।

यह कुछ हद तक वास्तविकता से मेल भी खाता है साहित्यिक परम्पराओं में पुरोहितों और राजाओं का वर्णन मिलता है जिसमें राजा अधिक धनी चित्रित होते थे। पुरोहित भी सामान्यतः धनी दर्शाये जाते हैं। हालांकि यदा-कदा निर्धन ब्राह्मण का भी चित्रण मिलता है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

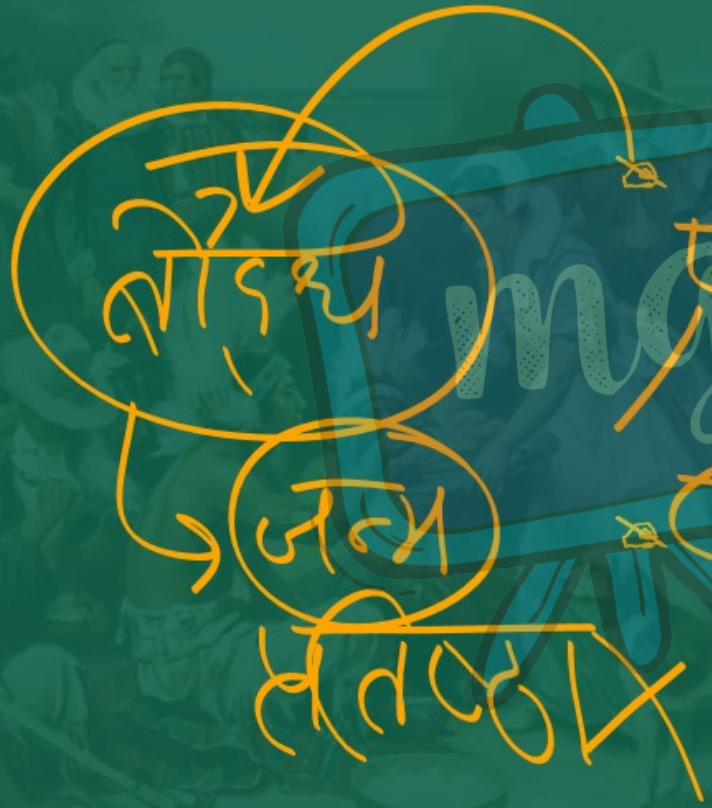

वर्णभेद की आलोचना –

- एक ओर जहां समाज के ब्राह्मणीय दृष्टिकोण को धर्मसूत्र और धर्मशास्त्रों में संहिताबद्ध किया जा रहा था वहीं अन्य परम्पराओं ने वर्ण व्यवस्था की आलोचना प्रस्तुत की।
- इनमें सर्वविदित आलोचनाऐं प्रारम्भिक बौद्ध धर्म में (600 ई. पू. से) विकसित हुई।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. क्या महाभारत में पुरुष व स्त्रीयों के संपत्ति के अधिकार समान थे?

Q. वर्ण भेद की आलोचना स्पष्ट किजिए?

- बौद्धों ने इस बात को अंगीकार किया कि समाज में विषमता मौजूद थी किंतु यह भेद न तो नैसर्गिक थे और न ही स्थाई रहेंगे।
- बौद्धों ने जन्म के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा को अस्वीकार किया।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

एक वैकल्पिक सामाजिक रूपरेखा : संपत्ति में भागीदारी

- अभी तक हमने वे परिस्थितियां देखी जहां लोग अपनी संपत्ति के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा का दावा करते थे, या फिर उन्हें वह स्थिति प्रदान की जाती थी।
- यद्यपि समाज में अन्य संभावनाऐं भी थीं जहां दानशील आदमी का भी सम्मान किया जाता था तथा कृपण व्यक्ति या जो स्वयं अपने लिए संपत्ति संग्रह करता था, घृणा का पात्र होता था।
- प्राचीन तमिलकम (तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल) एक ऐसा ही क्षेत्र था जहां उपरोक्त आदर्शों को संजोया जाता था।
- इस क्षेत्र में 2000 वर्ष पहले अनेक सरदारिया (चोल, चेर, पांड्य) थीं। ये सरदार अपनी प्रशंसा गाने वाले चारण और कवियों के आश्रयदाता होते थे।
- तमिल भाषा के संगम साहित्य में सामाजिक और आर्थिक संबंधों का अच्छा चित्रण है जो इस ओर इंगित करता है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

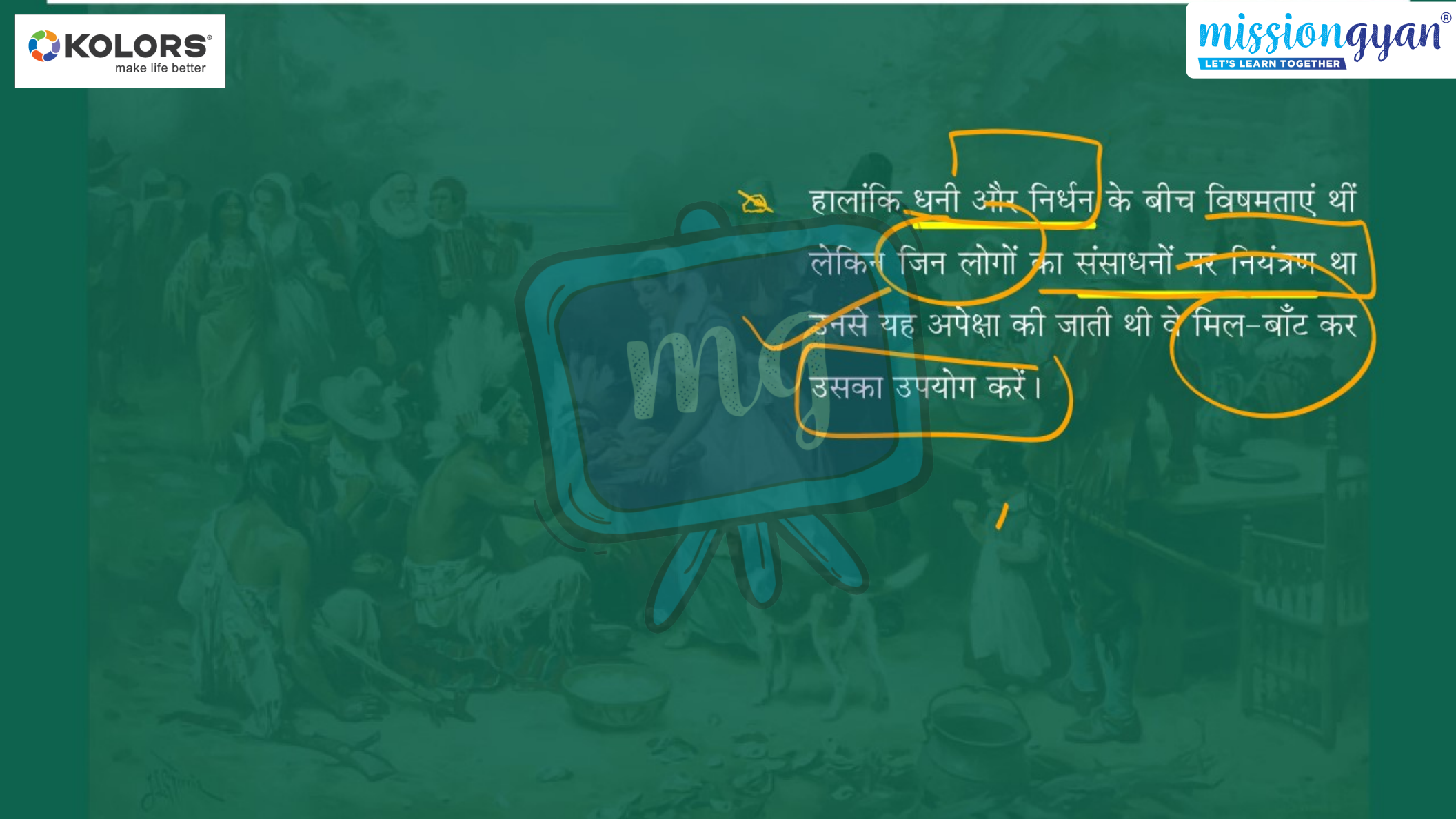

हालांकि धनी और निर्धन के बीच विषमताएं थीं लेकिन जिन लोगों का संसाधनों पर नियंत्रण था उनसे यह अपेक्षा की जाती थी वे मिल-बाँट कर उसका उपयोग करें।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

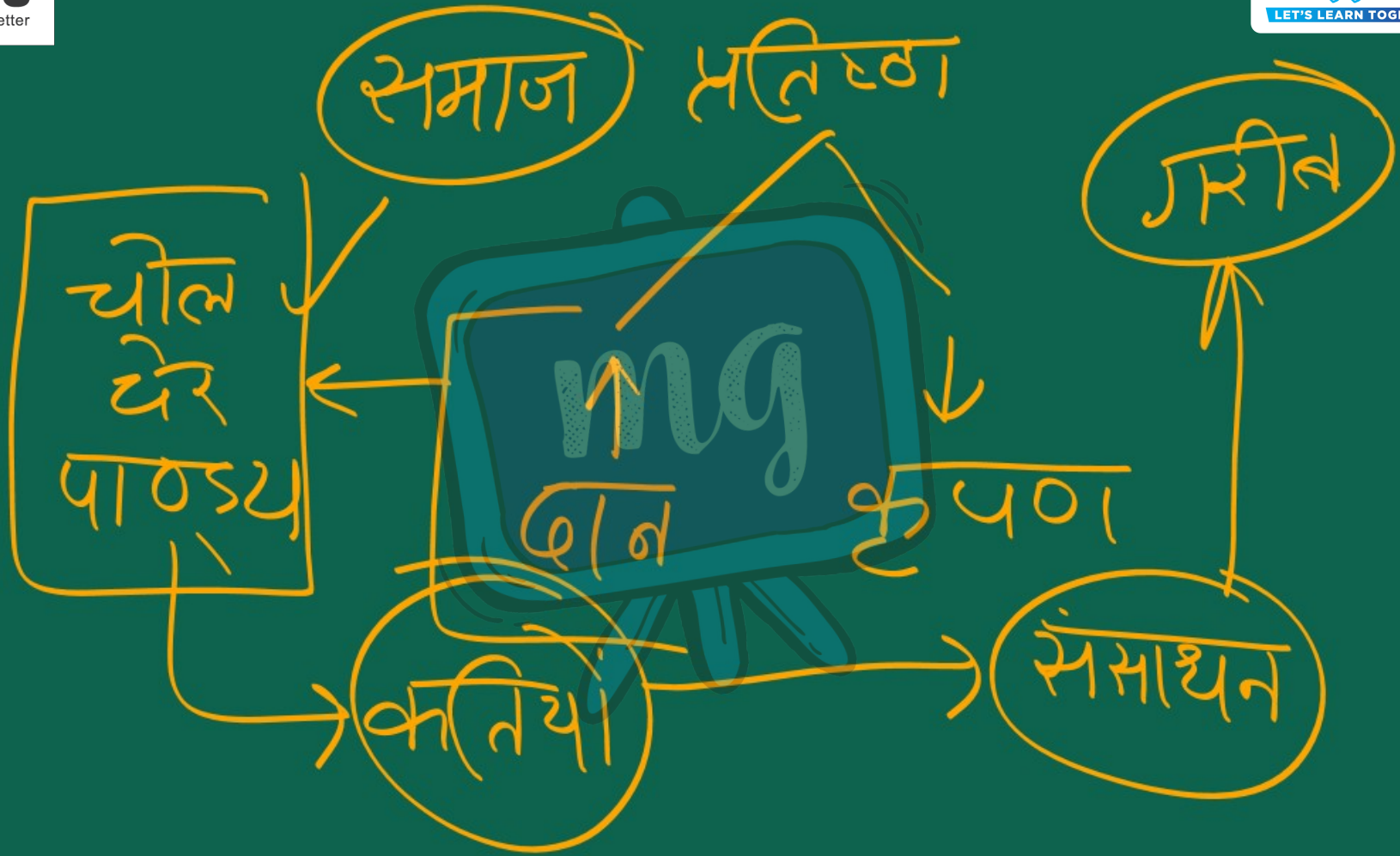

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. प्राचीन काल मे संसाधन प्रतिष्ठा का एक रूप किस प्रकार हुआ करते थे?

